शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'ग्राम्या' में ग्रामीण जीवन और संस्कृति

सविता (शोधार्थी)
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

छायावाद प्रेम, श्रृंगार, कल्पना और संस्कृति का काव्य है। इस काव्य का सृजन विधान प्रसाद, निराला तथा पंत जैसे सर्जकों से होता है। पंत छायावाद के महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं जो एक ओर कल्पना, प्रकृति और श्रृंगार से ओत-प्रोत वीणा, ग्रंथि, पल्लव और गुंजन जैसे काव्य का सृजन करते हैं तो दूसरी ओर सामाजिक चेतना, लोक- जीवन, लोक-संस्कृतिक और लोक-भाषा, लोक-संगीत और लोक-संस्कृति से लबरेज 'ग्राम्या जैसे महाकाव्य का लोक आख्यान प्रस्तुत करते हैं। पंत ने इस काव्य में लोक-समस्याओं का अंकन किया है जिसमें लोक-जीवन , ग्रामीण-जन-पुरूष, नारी, अल्हड़ युवती, लोक-नायक, लोक-संस्कृति, लोक-भाषा एवं भारतीय सभ्यता का आधुनिक दस्तावेज प्रस्तुत किया है। कवि ने लोक-जीवन की परिभाषा को 'ग्राम कवि में बड़ी शिद्दत से प्रस्तुत किया है-

"यहाँ न पल्लव वन में मर्मर यहाँ न मधु विहगों में गुंजन
जीवन का संगीत बन रहा यहाँ अतृप्त हृदय रोदन।"1

ग्राम्या में ग्रामीण जीवन

पंत 'ग्राम्या कवि' कविता में किसानों की बदहाली जिन्दगी और उनकी दयनीय दशा का वर्णन करते हैं। किसान की ऐसी दशा है कि वह अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर पा रहे हैं। अपने परिवार का भरण-पोषण करने में असमर्थ हैं, न तो वे भरपेट भोजन पा रहे हैं और न ही तन ढकने के लिए वस्त्र जुटा पा रहे हैं। बच्चे, बूढ़े, जवान सभी के चेहरों की रौनक नदारद है, उनके बसेरे झुग्गी-झोपडियां हैं , जहाँ वे बारहों मास गुजर-बसर करते हैं। इतनी सारी समस्याओं और बाधाओं के बावजूद भी किसान के मन गाँव में गुजर-बसर करने की आदम्य जिजिविषा बनी रहती है , क्योंकि उसे घर-परिवार , गाँव, खेत, खलिहान, नदी और नालों ग्रामीण-संस्कृति, जीवन-संस्कार, ग्रामीण-शिक्षा, भावी-संस्कृतियों के प्रादुर्भाव आदि से अगाध प्रेम है के संदर्भ में 'ग्राम' कविता से उदाहरण देख सकते हैं-

"मनुष्यत्व के मूल तत्व ग्रामों ही में अन्तर्हित,
उपादान भावी संस्कृति के भरे यहाँ हैं अविकृत।
शिक्षा के सत्याभासों से ग्राम नहीं है पीड़ित,
जीवन के संस्कार अविद्या-तम में जन के रक्षित।"2

पंत 'ग्राम्या' के माध्यम से गाँव के सौन्दर्य और महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि मनुष्य के मूल तत्व जैसे-सच्चाई , ईमानदारी, मेहनत, लगन, निःस्वार्थ आदि गाँव के लोगों में समाहित है। गाँव भारतीय संस्कृति के रक्षक , पालक-पोषक होते हैं। पंत गाँवों में शिक्षा व्यवस्था पर प्रहार करते हुए कहते हैं कि आज भी गाँवों की शिक्षा व्यवस्था जर्जर है। शिक्षा व्यवस्था जर्जर होने से अधिकांश बच्चे और युवक निरक्षर हैं और

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

निरक्षरता में ही अपना जीवन गुजारने के लिए मजबूर है।

पंत 'ग्राम' कविता के माध्यम से वेद, लोक, मानव जीवन की गाथा गाते हैं जिन वेदों में मानव जीवन की गाथा गाते हैं जैसे 'अन्धा युग' काव्य-नाटक में मानव जीवन के ध्वंस का चित्रण किया गया है, वैसे ही पंत क्षीण होती ग्रामीण व्यवस्था, हताश-निराश कृषकों का चित्रण करते हैं -

"बृहद् ग्रन्थ मानव जीवन का काल ध्वंस से कवलित / ग्राम आज है पृष्ठ जनों की करूण कथा का जीवित!"3

पंत किसानों की दीन-हीन दयनीय स्थिति को देखकर द्रवित होते हैं। किसानों की दयनीय दशा और हताश मनोवृत्ति को कवि 'वे आँखे' कविता में वर्णिन करते हैं-

"अन्धकार की गुहा सरीखी / उन आँखों से डरता है मन, / भरा दूर तक उनमें दारूण / दैन्य दुःख का नीरव रोदन!"4

प्रस्तुत पंक्तियों में पंत ने किसान की करूण कथा का वर्णन किया है जिसमें प्राकृतिक आपदा, संकट की मार खाये किसान का चित्रण है।

किसान की आँखों में दूर-दूर तक निराशा , मौन रूदन साफ झलक रहा है। यही वजह है किसान अपनी लहलहाती फसलों को देखकर गौरवान्वित होता है, जो आज जमींदार व्यवस्था का शिकार होकर अपने खेतों और अपने बैलों को गवाँ चुका है। किसान जमींदारी व्यवस्था से सदैव कर्ज में डूबा रहता है। इस कर्ज को जीवन भर चुका कर भी वह पूरा नहीं कर पाता। कर्ज किसानी जीवन का ऐसा अभिशप्त चक्र है , जिससे वह निकल नहीं पाता का नमूना प्रस्तुत है-

"निर्माण कर रहे वे जग का / जो जोड़ ईंट, चूना, पत्थर,/ जो चला हथौड़े, घन, क्षण-क्षण / है बना रहे जीवन का घर / जो कठिन हल की नोंकों से/ अविराम लिख रहे धरती पर / जो उपजाते फूल, फल, अन्न / जिन पर मानव जीवन निर्भर।"5

भारतीय किसान और मजदूर मानव जीवन के मूल आधार स्तम्भ हैं , जिस पर समाज टिका हुआ है जो दिन रात , कड़ी धूप, तेज बारिश और सर्दी जी तोड़ परिश्रम करता है। किसान खेतों में अन्न उगाकर सबका पेट भरता है। उदर की पूर्ति करता है। वही अंत में भूखा रह जाता है और उसका पूरा जवीन असुविधाओं में बीतता है।

पंत ने अपने कविता संग्रह 'ग्राम्या' में कृषक जीवन की कठिनाइयों, निर्धनता, अशिक्षा के वर्णन के साथ-साथ वहाँ की संस्कृति , रहन-सहन, तीज-त्यौहार, नहान आदि का भी हृदयस्पर्शी वर्णन किया है। कवि 'ग्राम्या' कविता में ग्रामीण युवती का चित्रण यथार्थ के धरातल पर अंकित किया है। कवि की नायिका ग्रामीण परिवेश में पली-बढ़ी नवोढ़ा नायिका है। जैसे विद्यापति के यहाँ नायिका 'शैशव-यौवन दुअ मिल गेल' जैसे ही पंत की नायिका अल्हड , बलखाती, इठलाती और शरारत से लबरेज ग्राम युवती है का उदाहरण 'ग्राम युवती' से प्रस्तुत है-

"उन्मद यौवन से उभर / घटा-सी नव असाढ़ की सुन्दर / अति श्याम वरण,
श्लथ, मन्द चरण, / इठलाती आती ग्राम युवति वह गजगति / सर्प डगर पर!"6

एक तरह उनके यहाँ इठलाती ग्राम युवती में यौवन की शरारत तो दूसरी तरफ सामाजिक मर्यादा, सामाजिक लोक-लाज, कर्मनिष्ठा, सौन्दर्य-वैभव, जीवन की सहचरिणी है का 'ग्राम नारी' कविता से बानगी देखी जा सकती है-

"स्वाभाविक नारी जन की लज्जा से वेष्टित,
नित कर्मनिष्ठ, अंगों की हृष्ट-पुष्ट सुन्दर,
श्रम से है जिसके क्षुधा काम चिर मर्यादित,
वह स्वस्थ ग्राम नारी, नर की जीवन सहचर!"7

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पंत के काव्य में अल्हड़ युवती , लोक-लाज युक्त नारी के साथ भारतीय संस्कृति की नारी है का 'ग्राम वधू' कविता से उदाहरण प्रस्तुत है-

"जाती ग्राम वधू पति के घर! / माँ से मिल, गोदी पर सिर धर , / गा गा बिटिया रोती जी भर / जन-जन का मन करूणा कातर / जाती ग्राम वधू पति के घर!"8

पंत की 'ग्राम्या' में एक ओर ग्रामीण अल्हण युवती है तो दूसरी तरफ विज्ञान , चिकित्सा से वंचित, भूख से छटपटाते बच्चे, बूढ़े और, तन पर मटमैले फटे-चिथड़े वस्त्र और शरीर की पसलियों का दिखना आदि का चित्रण 'गाँव के लड़के ' कविता से उदाहरण प्रस्तुत है-

"मिट्टी से भी मटमैले तन , अधफटे, कुचैले, जीर्ण वसन, / ज्यो मिट्टी के हो बने हुए, ये गँवई लड़के-भू के धन! / कोई खण्डित, कोई कुण्ठित, कृष बाहु, पसलियाँ रेखांकित, / टहनी-सी टाँगे, बड़ा-पेट, टेढ़े-मेढ़े, विकलांग घृणित।"9

पंत खेत-खलिहान, नदी-नाले, ललहाती फसलों में फैली हरियाली, सुनहली धूप, गाँव में बहते बयार की शीतलता और गाँव के स्त्रियों के हाथ के कंगनो की खनक और पौरों के पायजेब की झुनझुन की अनुगूँज का सौन्दर्य और ध्वनियों के ताजगी का एहसास 'ग्राम श्री' में देखी जा सकती है-

"फैली खेतों में दूर तलक / मखमल की कोमल हरियाली, / लिपटीं जिससे रवि की किरणें चाँदी की-सी उजली जाली! / तिनको के हरे हरे तन पर / हिल हरित रुधिर है रहा झलक , / श्यामल भू तल पर झुका हुआ / नभ का चिर निर्मल नील फलक!"10

सर्जक को घास के हरे-हरे तिनकों, सरसों के फूलों, आम की गदराई डालो और आकाश की निर्मलता ने प्रकृति-सौन्दर्य को कोमल बना दिया है। संस्कृति ही, किसी स्थान के रहन-सहन, खान-पान, आचार-व्यवहार, त्यौहार और भाषा आदि की द्योतन कराती है। जैसे महाराष्ट्र का 'पोंगल', केरल का 'ओड़म', बिहार का 'छठ' आदि महत्वपूर्ण त्यौहार एवं संस्कृति हैं। वैसी ही उत्तराखण्ड राज्य का 'फसल-पूजन' त्यौहार या संस्कृति महत्वपूर्ण है। पंत की कविताओं में उत्तराखण्ड में चमारों का नृत्य , कहारों का गीत, चरखा गीत से लोक संस्कृति का ताना-बाना देखने को मिलता है। भारतीय संस्कृति का अनूठा उदाहरण 'गंगा' कविता से दृष्टव्य है-

"जीवन के युग क्षण , किसे ज्ञात ? / विश्रुत हिम पर्वत से निर्गत , / किरणोज्वल चल कल उर्मि निरंत, / यमुना गोमती आदि से मिल होती यह सागर में परिणत।"11

'मकर संक्रान्ति' हमारे देश में मनाया जाने वाला महत्वपूर्ण त्यौहार है। इस त्यौहार पर गाँववासी उँच-नीच, अमीर-गरीब, जमींदार, किसान, बच्चे, बूढ़े, जवान, और औरतें सभी 'गंगा स्नान ' के लिए भेदभाव भूलकर जाते हैं। कवि ने 'नहान' कविता में इसका सजीव वर्णन किया है-

"जन पर्व मकर संक्रान्ति आज, / उमड़ा नहान को जन समाज, / गंगा तट पर सब छोड़ काज, लड़के, बच्चे, बूढ़े, जवान, / रोगी, भोगी, छोटे, महान, क्षेत्रपति, महाजन और किसान।"12

भारत संस्कृति और सभ्यता का देश है जहां ईंट, पत्थर और नदी आदि में देवी-देवताओं की मान्यता है। तो गाँव का 'ड़ीह' देवी-देवताओं की कोटि से कैसे बरकस रह सकता है। पंत , भवानी प्रसाद मिश्र की तरह गाँव के कवि हैं तो ग्रामीण देवता का स्तुति किये बिना उनका साहित्य कैसे पूरा हो सकता है। यही वजह है कि गाँव के 'ड़ीह' को गाँव का रक्षक और पहरी की संज्ञा 'ग्राम देवता' कविता में देते हैं-

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

"राम राम / हे ग्राम देवता, भूति ग्राम! / तुम पुरुष पुरातन, देव सनातन पूर्णकाम, / शिर पर शोभित वर छत्र, तड़ित् स्मित घन श्याम , / वन पवन मर्मरित-व्यंजन, दन्न फल श्री ललाम!"13

'नृत्य' भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का अभिन्न अंग है। जब से व्यक्ति ने अपनी भावनाओं , इच्छाओं को कला के माध्यम से प्रदर्शित करना शुरू किया है तभी से नृत्य भारतीय संस्कृति के अभिन्न हिस्से के रूप में स्थापित हुआ। ग्रामीण समाज में आज भी व्यक्ति शादी-विवाह के अवसर पर, धार्मिक कार्यक्रम और फसल पूजा के वक्त क्षेत्रीय नृत्य करके अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हैं। 'धोबियों का नृत्य ' कविता में कवि ने ग्रामीण मस्ती, झूम, नृत्य का वर्णन किया है-

"लो छन-छन, छन-छन / छन-छन, छन-छन
नाज गुजरिया हरती मन! / धनि के पैरों में घुंघरू कल, / नट की कटि में घण्टियाँ तरल,
वह फिरकी-सी फिरती चंचल / नट की कटि खाती सौ-सौ बल!"14

'चमारों का नाच ' कविता के माध्यम से लोक नृत्यका एक और बानगी देखी जा सकती है-

"मचा खूब हुल्लड़ हुड़दंग / धमक धमाधक रहा मृदंग / उछल-कूद बकवाद झड़प में / खेल रही खुल हृदय उमंग / यह चमार चौदस का ढंग।"15

पंत ने निम्न वर्गीय समाज के नाच-गाने को 'ग्राम्या' कविता संग्रह में शामिल किया है। कवि ने निम्न वर्ग नृत्य-गाने के बहाने पूंजीपतियों , जमींदारों और शोषकों पर आक्रोश अभिव्यक्त किया है। लोक नृत्य का एक और नमूना 'कहारो का रूद्र नृत्य' से देख सकते हैं-

"रंग-रंग के चीरों से भर अंग, चीरूवासा से / दैन्य शून्य में अपगतिहत, जीवन की अभिलाषा से, / जटा-घटा सिर पर, यौवन की श्मश्रु छटा आनन/ पर छोटी-बड़ी तूँबिया रं-रंग की गुरियाँ सज तन पर।।"16

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कवि ने समय , समाज और संवेदना को विषय-वस्तु बनाकर 'ग्राम्य' जैसे काव्य का विधान किया है जिसमें किसान की पीड़ा , दर्द और उसके फटेहाल जिन्दगी, खेतों-खलिहानों में काम करते ग्रामीण स्त्री-पुरूष और मजदूरों के सौदर्य , मानव जीवन की परिभाषा, ग्रामीण अल्हड़ युवती के शैशव की शरारत और उसके यौवन का सौन्दर्य , प्रकृति सुषमा, गवईं स्त्री के लोकलाज की मर्यादा और लड़के, जवान और बूढ़ों आदि के आत्मीय भाव को बयां किया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. सुमित्रा नन्दन पंत: सुमित्रा नन्दन ग्रंथावली भाग-दो पृष्ठ 131
2. वही, पृष्ठ 132
3. वही, पृष्ठ 132
4. वही, पृष्ठ136
5. वही, पृष्ठ142
6. वही, पृष्ठ133
7. वही, पृष्ठ 137
8. वही, पृष्ठ140
9. वही, पृष्ठ 138
10. वही, पृष्ठ141
11. वही, पृष्ठ 145
12. वही, पृष्ठ 143
13. वही, पृष्ठ152
14. वही, पृष्ठ139
15. वही, पृष्ठ 147
16. वही, पृष्ठ147